स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्षः 14 - अंक : 156, मुंबई, गुरुवार, 15 अगस्त, 2024 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक

मुंबई हलचल

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त ®

अब हर सच होगा उजागर

सूचना

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'मुंबई हलचल' कार्यालय में आज गुरुवार 15 अगस्त 2024 को अवकाश रहेगा, जिससे 16 अगस्त 2024 का अंक प्रकाशित नहीं होगा। अब हमारी अगली मुलाकात शनिवार, 17 अगस्त 2024 को होगी।

-संपादक

महाराष्ट्र के 44 लाख से अधिक स्कूली बच्चों को नहीं मिली स्कूल ड्रेस

शिंदे सरकार की 'एक राज्य, एक यूनिफॉर्म' योजना फेल?

मुंबई हलचल/संवाददाता

मुंबई। देश में हर साल स्वतंत्रता दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। हर स्कूल में इस दिन की अलग ही रौनक देखने को मिलती है। स्कूल के बच्चों को इस दिन के लिए नए स्कूल ड्रेस दिए जाते है। लेकिन इस बार राज्य के स्कूलों में अलग स्थिति देखने को मिल रही है। बताया जा रहा है कि राज्य के कई स्कूलों में बच्चों को अभी तक स्कूल ड्रेस नहीं मिले है। ऐसे में कुछ स्कूलों को छोड़कर राज्य के करीब 65 हजार स्कूलों के 44 लाख 60 हजार बच्चों को पुरानी यूनिफॉर्म में ही स्वतंत्रता दिवस मनाना पड़ेगा। (शेष पृष्ठ 3 पर)

स्कूल शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर ने क्या कहा...

स्कूल शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर अगले साल यूनिफॉर्म समय पर देने की बात कर रहे है। उन्होंने कहा कि यह पहला साल है और स्काउट गाइड ने हमें बताया था कि स्काय ब्ल्यू कलर का स्कूल का ड्रेस होगा। वहीं कुछ देर के बाद उन्होंने बताया कि उनका ड्रेस स्टील ग्रे कलर का है। इसके चलते स्कूल ड्रेस तैयार करने में रुकावट आई थी। उन्होंने कहा कि यह काफी उच्च गुणवत्ता वाला ड्रेस है, इसकी जांच केंद्र सरकार की समिति करती है। इस वजह से यूनिफॉर्म तैयार करने में देरी हो रही है।

अजित पवार के बयान पर रोहित पवार ने दी प्रतिक्रिया

मुंबई। महाराष्ट्र उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने विधानसभा चुनाव से पहले मतदाताओं के बीच पहुंच बनाने के लिए राज्य भर में जन सम्मान यात्रा निकाली है। इसी यात्रा के दौरान उन्होंने कहा कि बारामती लोकसभा क्षेत्र से सुप्रिया सुले के खिलाफ सुनेत्रा पवार को मैदान में उतारकर गलती की। रोहित पवार ने दावा किया कि सुप्रिया सुले के खिलाफ सुनेत्रा पवार को मैदान में उतारने का फैसला दादा का नहीं हो सकता है और इस फैसले के पीछे गुजरात कनेक्शन है। उन्होंने कहा कि यह निश्चित था कि सांसद सुप्रिया सुले के खिलाफ सुनेत्रा काकी को नामांकित करने का निर्णय दादा का नहीं हो सकता था। लेकिन आपके सहयोगी इसके खिलाफ अभियान चला रहे हैं और कहते हैं कि यह दादा का निर्णय था आप इसे गलती बता रहे हैं।

103 गैलेंट्री अवॉर्ड की घोषणा

चार को कीर्ति और 18 को शौर्य चक्र

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 78वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर सशस्त्र बलों और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के कर्मियों के लिए 103 वीरता पुरस्कारों को मंजूरी दी है। इनमें 4 कीर्ति चक्र और 18 शौर्य चक्र शामिल हैं। इनमें से 9 पुरस्कार मरणोपरांत हैं। वायु सेना के 2 बहादुर जवानों को शौर्य चक्र और 6 जवानों को वायु सेना मेडल दिया गया है। राष्ट्रपति ने एयरफोर्स के विंग कमांडर वर्नोन डेसमंड कीन वीएम को फ्लाइंग (पायलट) को शौर्य चक्र से नवाजा है। वहीं, विंग कमांडर जसप्रीत सिंह संधू को वायु सेना मेडल से दिया गया है।

शरद पवार ने मराठा समाज को मुश्किलों में डाला

मनोज जरांगे ने एनसीपी-एसपी प्रमुख पर पहली बार साधा निशाना

मुंबई हलचल/संवाददाता

मुंबई। मराठा समाज और उनके सगे सोयरे-(संबंधियों) को ओबीसी कोटे से आरक्षण की मांग कर रहे मनोज जरांगे पाटिल, एनसीपी (अजीत पवार) मंत्री छगन भुजबल, उपमुख्यमंत्री अजीत पवार, देवेंद्र फडणवीस और बीजेपी के दूसरे नेताओं को लगातार निशाना बनाते रहे हैं। इस मामले में अब तक ऐसा कहा जाता था कि मनोज जरांगे को ऐसा करने के लिए एनसीपी शरदचंद्र पवार के प्रमुख शरद पवार उकसाते रहे हैं। लेकिन मनोज जरांगे ने अब शरद पवार पर सीधा और सनसनीखेज आरोप लगा दिया है। (शेष पृष्ठ 3 पर)

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

हमारी बात

स्वतंत्रता का नव-चिंतन

प्रबुद्ध लोगों को अब अपनी मेधा यह समझने में लगानी चाहिए कि हमारा समाज आज किस हाल में है? आजादी के साथ देश ने जो लक्ष्य तय किए थे, उस यात्रा में हम आज कहां खड़े हैं?

भारत अपनी आजादी की 78वीं सालगिरह बदले राजनीतिक माहौल में मना रहा है। इस कारण यह संभव हुआ है कि सामाजिक सरोकार रखने वाले लोग स्वतंत्रता और अधिकारों के बारे में नए सिरे से सोच सकें। गुजरा दशक एक तरफ बड़े दावों, हकीकत से इतर नैरेटिव्स, और उन कथानकों से जगी ऊंची उम्मीदों का रहा, तो दूसरी ओर संविधान प्रदत्त आजादियों पर पहरा एवं अधिकारों के संकुचन से समाज के एक बड़े तबके में भारत की पारंपरिक परिकल्पना को लेकर शक गहराता गया। जनमत का एक बड़ा हिस्सा सामुदायिक टूटन के अहसास से ग्रस्त रहा। लेकिन 2024 में अचानक चीजें बदलती हुई दिखी हैं। उस बदलाव की ताजा मिसाल इसी स्वतंत्रता दिवस के मौके पर आयोजित हर घर तिरंगा अभियान बना है। यह आह्वान प्रधानमंत्री ने किया। तजुर्बा यह है कि पहले जब कभी नरेंद्र मोदी कोई ऐसा आह्वान करते थे, तो उस पर स्वतः-स्फूर्त एवं उत्साह प्रतिक्रिया होती थी। मगर इस बार कहानी उलटी रही है। सत्ताधारी भाजपा के समर्थक वर्ग तक में इसका खास असर नहीं दिखा। यही हश्र कांवड़ यात्रा के समय उत्तर प्रदेश में नाम की तख्तियां लगाने के आदेश या वक्फ बोर्ड कानून में संशोधन के बिल का भी हुआ है। ये सरकारी पहल समाज में भावावेश पैदा करने या सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को और तीखा करने में नाकाम रही हैं। यह समाज-शास्त्रीय या राजनीतिक अध्ययन का विषय है कि माहौल में यह परिवर्तन क्यों और कैसे हुआ है। बहरहाल, इस बदलाव से राष्ट्रीय विमर्श को सकारात्मक दिशा देने की संभावना जरूर पैदा हुई है। प्रबुद्ध लोगों को अब अपनी मेधा यह समझने में लगानी चाहिए कि हमारा समाज आज किस हाल में है? आजादी के साथ देश ने जो लक्ष्य तय किए थे, उस यात्रा में हम आज कहां खड़े हैं? बेरोजगारी और महंगाई जैसी समस्याओं के साथ बढ़ती गई आर्थिक मुश्किलों के अलावा अब हमारे सामने ढहते इन्फ्रास्ट्रक्चर, सीमाई इलाकों की सुरक्षा में लगती सेंध, लीक होते परीक्षा के पेपर, खेलों में फिसड्डी रहने जैसी हकीकतें भी हैं। इनसे निकलने का रास्ता क्या है, इन प्रश्न पर चर्चा शुरू कर हम स्वतंत्रता दिवस को अधिक सार्थक बना सकते हैं।

आज 78 वें स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

आजाद ,भगत, सुभाष और असफाक को जानते हैं या नही? नए लड़कों से पूछना जरूर!

मुंबई हलचल/संवाददाता

चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खान जैसे कितने ही देशभक्तों के बारे में शायद नई पीढ़ी की अधिकांश लोगों को कुछ पता ही नहीं है। अगर किसी को भी इस बात पर शक है तो वह अपने पड़ोस की किसी नए लड़के से आजादी के इन दीवानों चंद्रशेखर आजाद भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस आदि के बारे में एक बार अवश्य पूछे। उनका जो जवाब होगा। उसे पता चल जाएगा कि इन लोगों को देश की आजादी की कोई कीमत पता है या फिर नहीं ?और अगर नहीं तो यह हालात देश की स्वतंत्रता, उसकी एकता, अखंडता, शांति एवं संप्रभुता को अक्षुण्ण और निर्वाध बनाए रखने के संदर्भ में बहुत ही घातक हैं।

आज हमारा देश अंग्रेजों से आजादी का 78 वां साल हर साल की तरह स्वाधीनता दिवस के रूप में मना रहा है। देश की आजादी के लिए कितनों ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया अपनी कुर्बानी दी। चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खान जैसे कितने ही देशभक्तों ने आजादी के लिए बलिदान दिया अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। महात्मा गांधी जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि ने कितने आंदोलन किये। कितनी बार जेल गए। कितनी यातनाएं भोगीं। शायद नई पीढ़ी की अधिकांश लोगों को यह सब कुछ पता ही नहीं है। अगर किसी को भी इस बात पर शक है तो वह अपने पड़ोस की किसी नए लड़के से आजादी के इन दीवानों चंद्रशेखर आजाद भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस आदि के बारे में एक बार अवश्य पूछे। उनका जो जवाब होगा । उसे पता चल जाएगा कि इन लोगों को देश की आजादी की कोई कीमत पता है या फिर नहीं ? और अगर नहीं तो यह हालात देश की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण और निर्वाध बनाए रखने के संदर्भ में बहुत ही घातक हैं।

और अब अगर इसी क्रम में देश की आजादी की बात करें तो हर साल 15 अगस्त को भारत स्वतंत्रता दिवस मनाता है। 1947 में इसी दिन देश ने 200 साल के ब्रिटिश शासन से अपनी आजादी की घोषणा की थी। यह वह दिन है जब भारत ने स्वतंत्रता के लिए लंबे संघर्ष के बाद ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी हासिल की थी। स्वतंत्रता दिवस से एक रात पहले 14 अगस्त-1947 को भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक ऐतिहासिक भाषण भी दिया था , जिसे आज 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' के रूप में जाना जाता है। आधी रात को, भारत आधिकारिक तौर पर ब्रिटिश शासन से मुक्त होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया था। इस ऐतिहासिक अवसर पर जैसे ही तिरंगा झंडा हवा में लहराता है और राष्ट्रगान की गूंज हवा में गूंजती है, स्वतंत्रता दिवस कैलेंडर पर एक तारीख से अधिक हो जाता है। यह स्मरण की एक सहानुभूति, बलिदान के प्रति श्रद्धांजलि और एकता का उत्सव बन जाता है।

आज15 अगस्त 2024 को भारत अपना 78वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। यहां एक सवाल यह भी कि हम स्वतंत्रता की 77 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, या फिर 78 वीं । यह बात विरोधाभासी लग सकती है। लेकिन, 15 अगस्त 1948 को स्वतंत्रता की पहली वर्षगांठ मनाई गई। इस प्रकार यह ब्रिटिश आधिपत्य से हमारी मुक्ति की यह 77वीं वर्षगांठ है, यह इस महत्त्वपूर्ण अवसर का हमारा 78वां स्मरणोत्सव है।

हर साल स्वतंत्रता दिवस का जश्न एक खास थीम के मुताबिक मनाया जाता है। इस बार स्वतंत्रता दिवस का पर्व 'विकसित भारत' की थीम पर मनाया जा रहा है। इसका लक्ष्य, जब भारत आजादी के 100 वर्ष पूरे होने पर भारत को विकसित देश बनाना है।

अब अगर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे की बात करें तो हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रंगों का बहुत बड़ा महत्व और गहरा अर्थ है। इसी के साथ अपने भारत के राष्ट्रीय ध्वज को उसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था, लेकिन कम ही लोग जानते हैं कि तिरंगे को 'पिंगली वेंकैया' नामक शख्स ने डिजाइन किया था। इससे भी दिलचस्प बात यह है कि यह झंडा खादी से बनाया गया है ,जो राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में घरेलू स्तर पर भारतीय कपास से तैयार किया जाता।

तिरंगा झंडा डिजाइन करने वाले देशभक्त वैकेंया महात्मा गांधी से काफी प्रेरित थे। गांधी जी ने उन्हें इस ध्वज के बीच में अशोक चक्र रखने की सलाह दी थी, जो संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का संकेत बना। अब जहां तक रंगों का सवाल है, तिरंगे में केसरिया रंग साहस, बलिदान और त्याग की भावना का प्रतीक है। यह राष्ट्र के कल्याण के लिए बलिदान देने और भारतीयों की जीवंतता और गतिशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। इसी तरह से सफेद पट्टी पवित्रता शांति और सच्चाई का प्रतीक है। यह सत्य और अहिंसा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जैसा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने वकालत की थी और इन्होंने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस प्रकार तिरंगे की निकली पटटी यानी हरा रंग उर्वरता, विकास और सुभता का प्रतीक है। यह भारत की भूमि की समृद्धि और कृषि विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। अब आता हैतिरंगे में अशोक चक्र। सफेद पट्टी के केंद्र में अशोक चक्र होता है, जिसे प्राचीन भारत के सम्राट अशोक की राजधानी सरनाथ के स्तंभ से लिया गया है। इसमें 24 तीलियां है और यह सत्य, धार्मिकता और प्रगति की निरंतर खोज का प्रतिनिधित्व करती है। अशोक चक्र गति के विचार का भी प्रतीक है जो एक राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ाने की भारत की इच्छा को दर्शाता है। और यह इच्छा शक्ति ही किसी देश की एकता अखंडता और संप्रभुता को बनाए रखने का ठोस कारण होती है। और यही स्वतंत्रता का प्रमुख आधार भी है।

मालिक,मुद्रक,प्रकाशक-**दिलशाद एस खान** द्वारा एस आर प्रिंटिंग प्रेस,मोहन अर्जुन कंपाउंड, वैशाली नगर दहिसर (पूर्व),मुंबई-68 से मुद्रित व मुंबई हलचल,साईं मंगल को ऑ हॉ सो बी-2-301,इस्माइल बाग नियर मालाड शॉपिंग सेंटर, एस वी रोड,मालाड (प) मुंबई से प्रकाशित RNI NO MAHHIN/2010/34146, फोन:**9619102478 /9821238815**
email: mumbaihalchal@gmail com संपादक: **दिलशाद एस खान,** समाचार पत्र में छपे किसी भी समाचार से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा न्याय क्षेत्र मुंबई होगा।

शिवाजी नगर गोवंडी में नबीरे आला हजरत आई एम सी प्रमुख का जोरदार इस्तकबाल हुआ। बता दें कि नदीम कुरैशी के मुंबई गोवंडी स्थित आवास पर मौलाना तौकीर रजा पहुंचे थे। साथ ही मखदूम शाह माहिम दरगाह भी पहुंच कर मौलाना तौकीर रजा खां सहाब ने हाजरी दी और हाजी अली व माहिम दरगाह के ट्रस्टी सुहेल खंडवानी से मुलाकात की।

जब तक मुसलमानों के ऊपर से मजबूरी का टैग नही हटेगा तब तक हलात नही सुधरेंगे-मौलाना तौकीर रजा

मुंबई हलचल/संवाददाता

मुंबई। आईएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां ने एक बार फिर अपने बयान से सबको चौंका दिया। मुंबई में मुस्लिम वेलफेयर एसोसिएशन के मुस्लिम लीडरशिफ सम्मिट 2024 कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा कि जब तक मुसलमानों के ऊपर से मजबूरी का टैग नहीं हटेगा तब तक हालात नहीं सुधरेंगे। मुझ जैसे बहुत सारे लोग इस कौम को मिले हैं जिन्होंने मुसलमानों के हालात को देखते हुए संगठन का निर्माण किया। उन्होंने डॉ. जलील फरीदी के संघर्षों का जिक्र किया। तो दूसरी तरफ उन्होंने मुंबई के मशहूर डॉन रहे हाजी मस्तान को भी कौम का रहनुमा बताया, मुंबई के शिवजी नगर गोवंडी में भी मौलाना तौकीर रजा खान का इलाके के लोगों ने फूल मलाए और शाल पहनाकर जोरदार इस्तकबाल किया, आई एम सी के

प्रदेश संगठन प्रभारी नदीम कुरैशी के गोवंडी स्थित निवास पर दोपहर दो बजे पहुचे थे मौलाना तौकीर रजा खां, मौलाना तौकीर रजा खां ने कहा कि आज काम सिर्फ वही कर सकता है जिसके अंदर हुसैनी जज्बा है। मौलाना ने कहा कि मैंने करीब 14-15 साल से कोई चुनाव नहीं लड़ा, अपनी पार्टी को साइड कर दिया है। क्योंकि मुझे ये लग रहा था कि जिनके खिलाफ चुनाव लड़ रहा हूं उनको फायदा पहुंच रहा है। मौलाना तौकीर रजा ने कहा कि किसी को तो एक राय होकर मुसलमानों का नेता मानना होगा। लेकिन यह बहुत मुश्किल है। क्योंकि इसमें भी देवबंदी, बरेलवी का भेद पैदा हो जाएगा। इसलिए उनका मानना है कि एक सेंट्रल कमेटी बनाकर अच्छे लोगों को उसमें शामिल किया जाए। फिलहाल तो हमें अपने वजूद को बचाने पर फिक्र करनी चाहिए। क्योंकि मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बनाने की कोशिश की जा रही है। बल्कि उससे भी नीचे मुसलमानों की स्थिति जा पहुंची है, मौलाना तौकीर रजा खां ने मुस्लिम वेलफेयर एसोसिएशन अध्यक्ष और मुस्लिम लीडरशिप सम्मिट 2024 के आयोजक सलीम सारंग का भी शुक्रिया अदा किया मौलाना ने कहा इस तरहॉ के आयोजन होते रहने चाहिए। आईएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां ने कहा कि मुसलमानों पर लव जेहाद के आरोप लगते हैं अगर आरोप लग रहा है तो इससे अच्छा कोई आरोप हो ही नहीं सकता। उन्होंने कहा कि हम लव के लिए ही जेहाद कर रहे हैं क्योंकि अपने देश से मुहब्बत करते हैं इस तरह के आरोप हमारे ऊपर लगाने वाले नफरत के जेहादी हैं। इस दौरान मौलाना तौकीर रजा के साथ, आई एम सी के संगठन प्रभारी नदीम कुरैशी, मुस्लिम वेलफेयर एसोसिएशन के सारंग, एवं मुंबई के सभी जन प्रतिनिधि मौजूद रहे।

समाजिक काम करने से दिल को सुकून मिलता है: श्री समीर कुमार महासेठ विधायक सह पूर्व मंत्री मधुबनी बिहार

मधुबनी। बिहार विधानसभा के मानसून सत्र में मैंने मधुबनी जिले के विकास और समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया मधुबनी जिला बिहार का एक सीमांत जिला है और यहां के लोग वर्षों से बुनियादी सुविधाओं के अभाव में संघर्ष कर रहे हैं सरकार ने पटना में एक विश्वस्तरीय म्यूजियम की स्थापना की है जो निस्संदेह एक प्रशंसनीय कदम है लेकिन मधुबनी जैसे पिछड़े और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिले में अब तक ऐसा कोई म्यूजियम नहीं है। इसका परिणाम यह है कि हमारे बच्चों को इतिहास और संस्कृति की जानकारी प्राप्त करने के लिए दूरदराज के इलाकों विशेष रूप से पटना का रुख करना पड़ता है मधुबनी का क्षेत्रफल भी काफी बड़ा है और यहां के लोगों के पास मनोरंजन और ज्ञानार्जन के साधन अत्यधिक सीमित हैं एक म्यूजियम केवल मनोरंजन का साधन नहीं होता यह हमारे अतीत और धरोहर को संरक्षित करने और उन्हें नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी होता है। इसलिए मैंने बिहार सरकार से आग्रह किया है कि मधुबनी जिले में एक म्यूजियम की स्थापना की जाए जो न केवल हमारे इतिहास और संस्कृति को संरक्षित करेगा बल्कि यह हमारे बच्चों और स्थानीय समुदाय के लिए ज्ञान का एक प्रमुख स्रोत भी बनेगा। मधुबनी के विकास के लिए मेरी लड़ाई जारी है और मैं हर संभव प्रयास कर रहा हूं कि हमारे जिले को उसका हक मिले श्री समीर कुमार महासेठ विधायक सह पुर्व मंत्री मधुबनी ने कहा कि मधुबनी शहर और गांव की विकास के लिए बिहार में सबसे बेहतर साबित हो रही है।

सुमय्या अली को घोषित किया गया बेस्ट सोशल वर्कर ह्यूमन अवार्ड का विजेता

मुंबई हलचल/संवाददाता

मुंबई। 12/08/2024 को ब्लू रेडिसन होटल नागपुर में दैनिक भास्कर की ओर से ऑनलाइन वोटिंग द्वारा बेस्ट सोशल वर्कर ह्यूमन अवार्ड पुरस्कार का आयोजन किया गया था उसमें अनेक महिला प्रतियोगी थे आयोजकोने यह पुरस्कार ऑनलाइन वोटिंग पर आधारित किया था सुमय्या अली इनका बड़े पैमाने पर सभी जाती व धर्म के लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए किए गए सामाजिक कामों की दखल लेते हुए देशभर से सभी जातीय धर्म के लोगों ने भरपूर सुमय्या अली इन्हें ऑनलाइन वोटिंग की जिसकी वजह से सुमय्या अली बेस्ट सोशल वर्कर ह्यूमन अवार्ड के विजेता रहे यह पुरस्कार प्रमुख अतिथि नागपुर के पुलिस कमिश्नर रविंद्र जी सिंगल, आईएएस नागपुर मिताली सेठी, आईएएस नागपुर सौम्या शर्मा उनकी उपस्थिति में जरी उनके हाथों प्रदान किया गया उसी के साथ रेलवे टूर पैकेज और VICCO की ओर से गिफ्ट हैंपर प्रदान किया गया यह पुरस्कार सोहळा कार्यक्रम में महिला और पुरुष सैकड़ो की संख्या में उपस्थित थे यह पुरस्कार मिलने के बाद सुमैया अली इन्होंने ऑनलाइन वोटिंग करने वाले देश भर की जनता का आभार व्यक्त किया सुमैया अली इन्होंने अकोला जिला का नाम पूरे देशभर में रोशन करने पर सभी और उनका अभिनंदन हो रहा है।

(पृष्ठ 1 का समाचार)

महाराष्ट्र के 44 लाख से अधिक स्कूली बच्चों को नहीं मिली स्कूल ड्रेस

जानकारी के लिए बता दें कि महाराष्ट्र की शिंदे सरकार ने राज्य स्तर पर एक ही यूनिफॉर्म लागू करने का फैसला किया था। लेकिन सरकार का यह फैसला सिर्फ आश्वासन ही रह गया है। बताया जा रहा है कि जलगांव, लातूर, सोलापुर, नागपुर, हिंगोली, पुणे, अहमदनगर, नासिक, रायगढ़ जिलों में अब तक स्कूल के यूनिफॉर्म नहीं पहुंचे है। ऐसे में स्कूल शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर अगले साल यूनिफॉर्म समय पर देने की बात कर रहे है। जानकारी के अनुसार, राज्य सरकार ने जिला परिषद, नगर पालिका और महानगरपालिका के स्कूलों के 48 लाख विद्यार्थियों को एक स्कूल एक यूनिफॉर्म देने का फैसला किया था। इस फैसले को तत्काल लागू करने के आदेश भी दिए गए थे। इसके लिए महिला आर्थिक विकास निगम के माध्यम से स्कूल यूनिफॉर्म सिलवाई जानी थी। लेकिन अभी तक स्कूल में यूनिफॉर्म नहीं पहुंचे है। सरकार ने महिला स्व सहायता समूह को गणवेश सिलवाने के लिए लागत 100 रुपये प्रति यूनिफॉर्म और 10 रुपये आकस्मिक व्यय निर्धारित की गई थी। इसकी जिम्मेदारी स्कूल प्रबंधन समिती को दी गई थी।

शरद पवार ने मराठा समाज को मुश्किलों में डाला

उनका कहना है कि पवार ने मराठा समाज को मुश्किलों में डाला। उन्हीं की वजह से मराठों को अभी तक आरक्षण नहीं मिल सका है। मराठा समाज की शांति रैली के मंगलवार को नाशिक में समापन के बाद मनोज जरांगे ने बुधवार को अंतरवाली सराटी में मीडियाकर्मियों से बात करने के दौरान शरद पवार पर जमकर हमला बोला। दरअसल शरद पवार ने मराठा क्रांती ठोक मोर्चा के सदस्यों से कहा था कि राज्य में 50 फीसदी से ज्यादा आरक्षण नहीं दिया जा सकता है। इसलिए इस समस्या में हम कुछ कर ही नहीं सकते हैं। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे एक सर्वदलीय बैठक बुलाएं और उसमें सर्वसम्मति से कोई मार्ग निकालने की कोशिश करें तथा केंद्र सरकार समन्वय की भूमिका अपनाए तो हम उन्हें समर्थन देने को तैयार हैं। इसी बारे में पूछे जाने पर मनोज जरांगे, शरद पवार पर भड़क गए।

स्वतंत्रता दिवस से जुड़ी ये 8 रोचक बातें, हर किसी को होनी चाहिए पता

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस भारत का महत्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार है, जो हर साल 15 अगस्त के दिन मनाया जाता है। इस दिन भारत ने ब्रिटिश शासन से आजादी हासिल की थी। स्वतंत्रता दिवस भारत के लिए गर्व और एकता का प्रतीक है। यह दिन हमें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की कड़ी मेहनत और बलिदान की याद दिलाता है और एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत के निर्माण के हमारे दायित्व को दोहराने का अवसर देता है। स्वतंत्रता दिवस से जुड़ी कई ऐसी रोचक बाते हैं, जो हर भारतीय को पता होनी चाहिए।

तिरंगे का निर्माण

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के डिजाइन को पिंगली वेंकैया ने तैयार किया था। मूल डिजाइन 1921 में महात्मा गांधी को प्रस्तुत किया गया था और वर्तमान तिरंगे को 22 जुलाई 1947 को भारत की संविधान सभा द्वारा अपनाया गया।

पहला आंदोलन

सदियों तक अंग्रेजी हुकूमत ने भारत पर राज किया लेकिन जब अंग्रेजों का उत्पीड़न बढ़ने लगा तो देश की अलग अलग जगहों पर विरोध शुरू हुआ। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ और आजादी की मांग को लेकर सबसे पहला और बड़ा विरोध 1857 की क्रांति थी। इस क्रांति की आग पूरे देश में फैली और पूरे देश में आंदोलन शुरू हो गए।

पहला ध्वजारोहण

15 अगस्त 1947 को भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले पर पहली बार ध्वजारोहण किया था। यह परंपरा तब से हर साल जारी है और हर प्रधानमंत्री इस दिन लाल किले पर झंडा फहराते हैं और देश को संबोधित करते हैं।

लाल किले की परेड

स्वतंत्रता दिवस के समारोह का मुख्य आकर्षण लाल किले पर आयोजित होने वाली परेड होती है, जिसमें भारतीय सेना, नौसेना, वायु सेना और अन्य सुरक्षा बलों की टुकड़ियां भाग लेती हैं। इसके अलावा, विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक झांकियों का प्रदर्शन भी होता है।

राष्ट्रध्वज से जुड़े रोचक तत्व

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में शामिल केसरिया रंग साहस का प्रतीक है। श्वेत रंग सत्य और शांति का प्रतीक है। हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता का प्रतीक है। इसमें मौजूद अशोक चक्र में 24 तीलियां होती है।

राष्ट्रगान के नियम

राष्ट्रगान गाए और बजाए जाते समय हमेशा सावधान की मुद्रा में खड़े रहना चाहिए। उच्चारण सही और 52 सेकेंड की अवधि में ही गाया जाना चाहिए।

राष्ट्रगान

स्वतंत्रता दिवस पर 'जन गण मन' को राष्ट्रगान के रूप में गाया जाता है। इसे पहली बार 1911 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता (अब कोलकाता) अधिवेशन में गाया गया था। रवींद्रनाथ टैगोर राष्ट्रीय गान के रचयिता हैं।

राष्ट्रीय अवकाश

स्वतंत्रता दिवस भारत में एक राष्ट्रीय अवकाश है। इस दिन सभी सरकारी कार्यालय, स्कूल, और अधिकांश निजी संस्थान बंद रहते हैं। लोग ध्वजारोहण, परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं।

'जनता के सहयोग से ही हल हो सकते हैं मुल्क के बड़े-बड़े सवाल'

प्रधानमंत्रियों के वो कोट्स जिन्होंने सरकार के विजन के दिए संकेत

भारत 78वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। साल 1947 में मिली आजादी के बाद से अब तक देश एक लंबा सफर तय कर चुका है। प्रथम स्वतंत्रता दिवस से लेकर अब तक देश ने काफी तरक्की की है और आने वाले दिनों में भारत की तरक्की का यह ग्राफ और तेजी से बढ़ता नजर आ रहा है। किसी भी स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री द्वारा दिया जाने वाला भाषण उनकी सरकार का देश को लेकर आने वाले सालों के विजन का एक नजरिया पेश करता है। आइए जानते हैं, देश की आजादी के बाद स्वतंत्रता दिवस पर विभिन्न प्रधानमंत्रियों द्वारा दिए गए कुछ ऐसे कोट्स के बारे में, जो इतिहास के पन्नों में सदा-सदा के लिए अमर हो गए। उन्हें आज भी याद किया जाता है...

पं.जवाहर लाल नेहरू

'एक आजाद मुल्क में तब तक बड़े-बड़े सवाल हल नहीं हो सकते जब तक कि आम जनता का उसे हल करने में पूरा सहयोग न हो और मदद न हो'

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दूसरे स्वतंत्रता दिवस पर 1948 में उपरोक्त कोट्स का इस्तेमाल करते हुए कहा था, कहा कि देश के सामने बड़े-बड़े सवाल है, हम कुर्सी पर बैठे हैं, जिम्मेदारी हमारी है लेकिन आम जन का भी सहयोग चाहिए। उन्होंने देशवासियों से कहा कि आप एक आजाद कौम हैं तो खाली ऐतराज करने से काम नहीं चलता। उस बोझे को उठाना है, सहयोग करना है, मदद करनी है और अगर हम सब इस तरह से करें तो बड़े से बड़े मसले हल होंगे।

लाल बहादुर शास्त्री

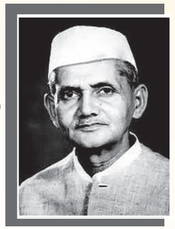

'कश्मीर का एक भी टुकड़ा पाकिस्तान को मिलने वाला नहीं'

साल 1965 में स्वतंत्रता दिवस के मौके पर तब के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा कि कश्मीर पर हमला किया जा रहा है और मैं जानता हूं कि पाकिस्तान उसे बढ़ाने का पूरा इरादा रखता है। जो एक बड़ा संकट हमारे ऊपर आया है, उसके लिए हमको और आप सब को तैयार रहना होगा। आज आराम का वक्त नहीं, आज त्याग का, बलिदान का, कुर्बानी का, जो भी रास्ता हो वह हमें इख्तियार करने के लिए तैयार रहना होगा। मैं आपकी तरह से यह यह कहने वाला हूं और कहना चाहता हूं कि कश्मीर का एक टुकड़ा भी पाकिस्तान को मिलने वाला नहीं है।

इंदिरा गांधी

'आजादी कोई जादू नहीं है कि उससे तुरंत गरीबी दूर हो जाए, कठिनाइयां और कष्ट दूर हो जाएं। आजादी से केवल एक दरवाजा खुला, सदियों की घुटन दूर हुई।'

आपातकाल लगाने के बाद 1975 में स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करते हुए इंदिरा गांधी ने इस कोट्स का इस्तेमाल किया था। उन्होंने कहा कि हमने जो रास्ता चुना वो लोकतंत्र का रास्ता था, लेकिन लोकतंत्र के माने ये नहीं है कि जिसका चाहे जिस रास्ते पर जाए। ऐसा रास्ता नहीं पकड़ सकते जिससे दूसरों को कष्ट हो या जिससे देश के दुर्बल होने का भय हो या जिससे दूसरी शक्तियों का, दूसरे प्रभाव बाहर से आ सकें और हमारी नीति या हमारी दिशा पर अपना प्रभाव डाल सकें। हम केवल भारत के हित को देखते हुए आगे बढ़ते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी

'आइए अब भविष्य की ओर देखें। हमें एक समृद्ध स्वावलम्बी और स्वाभिमानी भारत का निर्माण करना है। हम इस दिशा में चल पड़े हैं, हम इस दिशा में आगे बढ़ेंगे। हमें रफ्तार को और तेज करना है।'

साल 2000 में स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबंधित करते अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा – भारत को भविष्य की चुनौतियों तथा सुअवसर पर भी ध्यान देना चाहिए। विगत के विवादास्पद मुद्दों में नहीं उलझना चाहिए। आइए अब भविष्य की ओर देखें। हमें एक समृद्ध स्वावलम्बी और स्वाभिमानी भारत का निर्माण करना है। हम इस दिशा में चल पड़े हैं, हम इस दिशा में आगे बढ़ेंगे। हमें रुकना नहीं है, रफ्तार को और तेज करना है।

नरेंद्र मोदी

'सरकार एक असेम्बल्ड एन्टिटी नहीं, एक ऑर्गेनिक यूनिटी बने, एकरस हो सरकार- एक लक्ष्य, एक मन, एक दिशा, एक गति, एक मति- इस मुकाम पर हम देश को चलाने का संकल्प करें। हम चल सकते हैं।'

2014 में स्वतंत्रता दिवस के मौके पर देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस कोट्स का इस्तेमाल करते हु कहा था, मैंने जब दिल्ली आ करके एक इनसाइडर व्यू देखा तो मैंने अनुभव किया, मैं चौक गया। ऐस लगा जैसे एक सरकार के अंदर भी दर्जनों अलग-अलग सरकारें चल रही हैं। इसलिए मैंने कोशिश प्रारंभ की है।

भारत का स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 15 अगस्त को देश भर में हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है । यह प्रत्येक भारतीय को एक नई शुरूआत की याद दिलाता है। इस दिन 200 वर्ष से अधिक समय तक ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चंगुल से छूट कर एक नए युग की शुरूआत हुई थी। 15 अगस्त 1947 वह भाग्यशाली दिन था जब भारत को ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्र घोषित किया गया और नियंत्रण की बागडोर देश के नेताओं को सौंप दी गई। भारत द्वारा आजादी पाना उसका भाग्य था, क्योंकि स्वतंत्रता संघर्ष काफी लम्बे समय चला और यह एक थका देने वाला अनुभव था, जिसमें अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन कुर्बान कर दिए।

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के साथ ढ़ालती भी आई है। आजादी पाने के बाद भारत ने बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की है। भारत कृषि में आत्मनिर्भर बन चुका है और अब दुनिया के सबसे औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में भी इसकी गिनती की जाती है। विश्व का सातवां बड़ा देश होने के नाते भारत शेष एशिया से अलग दिखता है जिसकी विशेषता पर्वत और समुद्र ने तय की है और ये इसे विशिष्ट भौगोलिक पहचान देते हैं। उत्तर में बृहत पर्वत श्रृंखला हिमालय से घिरा यह कर्क रेखा से आगे संकरा होता जाता है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर इसकी सीमा निर्धारित करते हैं। पूरी तरह उत्तरी गोलार्ध में स्थित भारत की मुख्यभूमि 8 डिग्री 4 मिनट और 37 डिग्री 6 मिनट उत्तरी अक्षांश और 68 डिग्री 7 मिनट तथा 97 डिग्री 25 मिनट पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिकतम लंबाई 3,214 कि.मी. और पूर्व से पश्चिम तक अधिकतम चौड़ाई 2,933 कि.मी. है। इसकी जमीनी सीमाओं की लंबाई लगभग 15,200 कि.मी. है। जबकि मुख्यभूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

मै तुम्हारा देश भारत बोल रहा हूं...

प्रिय भारत वासियों,
दक्षिण एशिया में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश मै भारत हूँ। भौगोलिक दृष्टि से भी विश्व का सातवा बड़ा देश मै ही हूँ। मेरी सभ्यता ४००० वर्ष पुराणी है, जो दुनिया मे अधिक पूरातन है, जिसमे प्राचीन मंदिर स्थित कई कलाकारियों से परिपूर्ण अनेक रीति-रिवाजो ओर परंपराओ का संगम है। जो देश की समृध्द संस्कृति और विरासत का परिचायक है,यही अपने-आप को बदलते समय के साथ ढालती भी आई है। इतिहासकारों, लेखको, साधु-संत, ऋषिमुनीयों की गाथाएँ मुझमे समायी हुई है। यही आजादी पाने के बाद मैने बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की हैं। में कृषि में भी आत्मनिर्भर हूँ। मुझमे कई सारे राज्य शहर और गाव समाये हुए हैं जो हर त्योहारो, जाति-धर्म, शादी-ब्याह के गीत गाकर मेरा गुणगान करते हैं।
कई वर्ष पहले नियती ने मेरे साथ एक खेल खेला था, जिसमे में अंग्रेजो का गुलाम बन गया था। करीब १५० वर्ष तक मे उनके जुल्मो और अत्याचारों को सहता रहा।,कई प्रयासों के बाद मुझे १९४७ को आजादी मिली है। मेरे स्वतंत्रता का संग्राम ऐसे क्रांतिकारों के कारनामो से भरा है,जिन्होने अपनी चिंगारी से युगों को रोशन किया है।जिसमे बूढ़े-जवान से लेकर बालक भी शाहिद हुए है।,इन क्रांतिकारियों ने क्रांति ओर जनचेतना को जगाकर मुझे एक नई दिशा दि थी।,ओर में आज आजाद हूँ! लेकिन भ्रष्टाचार के साथ-साथ बढ़ती हिंसा और आतंकवाद ने मेरे नाक मे दम कर दिया है। फिर भी हर चुनौतियों का सामना मेरे मिलिट्री के जवान कर रहे है,शस्त्र सेना के तीनों प्रभाग थल सेना, नौ सेना, वायु सेना सीमापर मेरी रक्षा करने हेतु तत्पर रहते है।मेरे खातिर कई सारे विरों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है। दुनिया का शायद ही कोई ऐसा देश हो जहां अपने शहिद पति की मृत्यु के बाद वीरांगणाएँ चूडियाँ उतारकर रणभूमि में जाने को आतुर दिखाई देती है। यहा का बच्चा-बच्चा बलिदान देने के लिए तत्पर हो जाता है, वह मैं भारत देश हूँ। इन्ही के कारण में एक सूत्र में बंधा हुआ हूँ, राष्ट्रगीत ओर देशभक्ति के गीतों से हर व्यक्ति यहा गर्वित हो उठता है।देश प्रेरित गीतों के भाव से इतिहास, वर्तमान और भविष्य की तस्वीर के साथ शहीदों का पुण्यस्मरण भी छलकता है। जिन्होंने सिने पर गोली खाते हुए मुस्कुराते हुए मेरे गीत गाए थे।

कर चले हम फिदा जान-ओ-तन साथियों अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों!

मुझे इसी बात की चिंता है कि,मेरा

भविष्य युवाओं ओर हमारी आनेवाली नई पीढ़ी पर निर्भर है। जो हमारे नन्हें-मुन्ने कोमल प्यारे-प्यारे फूलों जैसे बालक हैं। स्वतंत्रता दिवस पर श्वेत पोशाक पहनना, तिरंगा झंडा फहराना, परिवार एवं दोस्तो के साथ देशभक्ति के गीत गाना, फिल्मे देखना और स्वतंत्रता का उत्सव मनाना यह कहाँ तक सही है?
मेरा ७८वा स्वतंत्रता दिवस आ गया है, मैं अमृत महोत्सव मना रहा हूँ! आज दुर्भाग्य के एक ओर युग को में समाप्त कर रहा हूँ! और में पुनः स्वयं को खोज पा रहा हूँ। आज जिस उपलब्धी का उत्सव मना रहा हूँ, इससे भी बडी विजय और बड़ी उपलब्धियाँ मेरी प्रतिक्षा कर रही हैं। मेरी सेवा का सही अर्थ है,लाखो-करोड़ो पीडितों की सेवा करना,निर्धनता को धन की सहायता करना,अज्ञानता को साक्षर करके अंधकार मिटाना,प्रति वर्ष कोई न कोई बीमारी का मिल-जुलकर सामना करना। कोरोना महामारी के कारण कई सारें परिवार बेसहारा हो चूके है, बच्चे अपने माता-पिता को खो कर अनाथ हो गए है, इनकी मदद, शिक्षा ही आज महान पुण्य का कार्य है। नारी का सम्मान करना,एन्ट्रोप्रेनयोर द्वारा कई ट्रेनिंग सेशन और वर्कशॉप की भारतीय महिलाए होस्ट करने लगी है। खेलकुद मे हिस्सा लेकर ऑलंपिक मे भी पुरूषों के साथ-साथ अपने कदम को जमा लिया है। चंद्रयान मिशन की सफलता के साथ-साथ, आदिवासी महिलाओं का उत्थान एवं तेज विकास हो रहा है। देश के निर्माण में युवाओं का एक तरफ साथ मिल रहा है तो -दूसरी ओर मणिपुर की हिंसा जैसे कांड ने मुझे दहला दिया ! मुझमे बसे मेरे अंश मेरे गाव जला दिए गए।,फिर भी एक कदम आगे बढते हुए आज के दौर मे मैं आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा हू ,और स्थित धरती पर पढी -लिखी माता-बहनोंपर अन्याय अत्याचार के साथ बलात्कार की घटनाओं ने मुझे एक पल के लिए तोड दिया! फिर से राजनीती की कुट नीतियों के साथ-साथ आंतरिक जाती-वाद, दंगल जैसी गत घटनाओं की सोच में मैं हमेशा डूबा रहता हूँ कि, ये मेरे भीतर किस तरह की बिमारी बढ रही है! जो मुझे चैन कि, सांस लेने नहीं देती ।कोई मुझे समझ सकता है? क्या बहारी चुनौतियों का सामना मेरे लिए कम है? बांग्लादेश की धर्मभेद की घटनाओं एवं दृष्यों ने मेरे हृदय में छेद कर दियो जिसकी जूदाई में कभी भूला नही सकता जो कभी मेरा अंश था` शुक्र है मेरी सेना का जो उत्साहवर्धक है। में दुनिया का शक्तिशाली देश बनने जा रहा हू ,हर कोई मुझसे दोस्ती करना चाहता है। साथ ही जवानों का हौसला बढ़ाना उनके परिवार की रक्षा करने से ही मुझे आनंद प्राप्त होता है।आज बच्चों को संस्कार की अधिक जरूरत है,जो आगे चलकर मेरे प्रति आदर,सम्मान गर्व महसूस कर के संस्कृति में ऋची निर्माण करें,जो पाश्चिमात्य संस्कृति का अनुकरण करना छोड दे । मेरा देश कई योजनाओं के लाभ के कारण आत्मनिर्भरता की और कदम बढा चूका है आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल डिटॉक्स को अपनाते हुए स्वस्थ एवं सुरक्षित भारत बनने जा रहा है आजादी के अमृत वर्ष के उपलक्ष पर हर घर तिरंगा के साथ-साथ हर एक व्यक्ति तिरंगे की शान बढाने के लिए सदा तत्पर रहें , हमारे पुर्वजों की यही इच्छा है कि,हर ऑख से ऑसू मिटें बढ़ते प्रदूषण को रोकने मे,जल का योग्य मात्रा मे उपयोग,वृक्ष संवर्धन के साथ-साथ राष्ट्रिय एकता एवं कानून व्यवस्था की मजबूती ओर संविधान के नियमों का पालन करने से मैं सभी प्रकार के अन्याय-अपराधों से मुक्त होकर सशक्त बन जाऊ यही मेरी मनोकामना हैं। जय हिंद !

योगिता तांबोली नंदुरबार महाराष्ट्र

उधोगपति एवं समाजसेवी विजय कपूर का शहरवासियों ने धूमधाम से मनाया जन्मदिन

कानपुर। शहर के जाने -माने उधोगपति एवं समाजसेवी विजय कपूर का जन्मदिन बुधवार को शहर के उधमियों, व्यपारियो एवं आम नागरिकों ने बडी ही धूमधाम के साथ मनाया। इस मौके पर लोगों ने उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। मंगलवार को दादा नगर स्थित कोपोस्टेट परिसर में ख्यातिलब्ध उधमी एवं कोपोस्टेट चेयरमैन विजय कपूर के अवतरण दिवस के मौके पर उन्हें बधाई देने के लिए शहरवासियों का हुजूम उमड पडा। सुबह लगभग 9 बजे से लेकर देर शाम तक उन्हें बधाई देने वालो का ताता लगा रहा। हर आम से लेकर खास तक इनमे शामिल थे।विजय कपूर एक बडे उधोगपति होने के बावजूद अपने स्नेहिल एवं मृदुभाषी व्यवहार के लिए जाने जाते है।यही कारण है कि वह उधोग जगत के अलावा आम लोगों मे भी अपने समाजसेवी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। कोरोना काल के समय जब आम लोगों को आक्सीजन सिलेंडर की दिक्कतों से जूझना पड़ रहा था तो शहर के वे ही एकमात्र उधमी थे जिन्होंने कोरोना की परवाह किए

बगैर जरूरतमंद गरीब लोगों को मुफ्त में सिलेंडर उपलब्ध कराए। जिस कारण सैकड़ों लोगों की जाने बचाई जा सकी। यही नही हर संकट के समय उधमियों के साथ साथ अपने सामाजिक दायित्व के तहत आम लोगों की मदद करने मे विजय कपूर कभी पीछे नही रहते।आज इन्हीं कारणों से उनकी छवि कुशल उधमी की कम एक समाजसेवी की ज्यादा है।उनके जन्मदिन पर उमडी भीड़ मानो यही बता रही थी कि अगर हम सच्चे एवं निर्विभाव से शुद्व अंतःकरण के साथ धनोपार्जन के साथ अपने सामाजिक दायित्वों को भी निभाए तो हम अपने मन की शांति के साथ समाज व देश का भी भला कर सकते है।विजय कपूर लोगों ने फूल के गुलदस्ते एवं बुके देकर एवं माला पहनाकर उनके सदैव स्वस्थ रहने एवं दीघार्यु की ईश्वर से कामना की। इस मौके पर शहर के जनप्रतिनिधियों के अलावा भाजपा साहित्य प्रचार विभाग, कानपुर दक्षिण जिले के संयोजक प्रकाश वीर आर्य, अंकुर खन्ना, प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी, गुड्डे सक्सेना, गुड्डी शर्मा, पूर्व संगठन मंत्री संजय दूबे, अरूण कुमार बाजपेयी (बउवा), चन्द्र कान्ता गेरा, शुभकुमार वोहरा, श्याम लाल मुलचंदानी आदि रहे।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

घर-घर तिरंगा अभियान पर विशेष प्रस्तुति

राष्ट्रीय झंडे को डिजाइन करने वाली पहली आईपीएस महिला अफसर सुरैया तैयब जी और स्वतंत्र भारत में लाल किले मे सबसे पहले तिरंगा फहराने वाले आजाद हिंद फौज के जनरल शाहनवाज खान को सभी देशवासियों का सलाम

सुरैया बदरुद्दीन तैयब जी हैदराबाद की रहने वाली पहली आईपीएस महिला ऑफिसर थी जो सन 1947 में पीएमओ ऑफिस में तैनात थी। आपका पूरा परिवार ही भारतवर्ष की स्वतंत्रता संग्राम का दीवाना था। सन 1902 में मुंबई में आपके शौहर बदरुद्दीन तैयब जी भारत में पहले चीफ जस्टिस थे जिन्होंने बाद में नौकरी से इस्तीफा देकर कांग्रेस के संगठन और आंदोलन में अपनी पूरी जिंदगी निछावर कर दी। वह कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। सुरैया तैयब जी मशहूर क्रांतिकारी मौलवी अलाउद्दीन और अकबर हैदरी की भांजी थी। मौलवी अलाउद्दीन साहब को सन 1857 में काला पानी की सजा हुई थी।

यह वह मुस्लिम औरत थी जिन्होंने गांधी जी के कहने पर देश का नेशनल फ्लैग राष्ट्रीय झंडा डिजाइन किया था। मुल्क के कुछ इतिहासकारों ने इस फ्लैग झंडे को भी दूसरे के नाम से जोड़ दिया, जबकि पिंगाली वेंकैया जी होमरूल लीग का फ्लैग और कांग्रेस का फ्लैग जिस पर चरखा बना था डिजाइन किया था यह बात पटटाभि सीताराम्मैया ने कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में कही थी, जिसे फ्रीडम स्ट्रगल ऑफ इंडिया 1857 में मशहूर इतिहासकार ताराचंद ने भी लिखा है। सुरैया तैयब जी द्वारा नेशनल फ्लैग जिस पर अशोक का प्रतीक धर्म चक्र बना है डिजाइन किया गया था इसे मशहूर अंग्रेज राइटर ट्रेवर रॉयल ने अपनी पुस्तक दि लास्ट डेज ऑफ दि राज में भी लिखा है। इसी विषय में हैदराबाद के इतिहासकार ए पांडुरंग रेड्डी ने भी राष्ट्रीय ध्वज के डिजाइन के तौर पर सुरैया तैयब जी के नाम को ही आगे किया और उन्होंने भी यही ब्रिटिश लेखक ट्रेवर रॉयल की किताब द लास्ट डेज ऑफ द राज का ही हवाला दिया। इसमें कहीं शक नहीं है कि नेशनल फ्लैग सुरैया तैयब जी ने डिजाइन किया था।

कांग्रेस नेता नवीन जिंदल के बनाए गैर सरकारी संगठन फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया के मुताबिक यह राष्ट्रीय झंडा तिरंगा सुरैया बदरुद्दीन तैयब जी का ही डिजाइन था जिसे संविधान सभा ने राष्ट्रीय ध्वज के लिए मंजूर किया था। नवीन जिंदल ने सुप्रीम कोर्ट में नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार मिलने को लेकर कानूनी लड़ाई जीतने के बाद फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया का गठन किया था। (संदर्भ - किताब लहू बोलता भी है पेज नंबर 156 - 157 लेखक सैयद शाहनवाज अहमद कादरी व कृष्ण कल्कि)

यह तो बात हो गई राष्ट्रीय झंडा को डिजाइन करने वाली पहली आईपीएस महिला अफसर सुरैया तैयब जी की और सभी देशवासियों को जानना चाहिए कि आजाद हिंद फौज के महान क्रांतिकारी जनरल शाहनवाज खान ने हीं स्वतंत्र भारत में सबसे पहले लाल किले से अंग्रेजों के ब्रिटिश सरकार के झंडे यूनियन जैक को उतारकर सबसे पहले तिरंगे झंडे को फहराया था जो आज तक लाल किले मे शान से लहरा और इंशाल्लाह इसी तरह हमेशा लहराता रहेगा। (संदर्भ किताब लहू बोलता भी है पेज नंबर 192)। आज भी लाल किले में रोज शाम 6:00 लाइट एंड साउंड का जो प्रोग्राम होता है उसमें नेताजी की आवाज के साथ जनरल शाहनवाज खान की भी आवाज है 1997 में भारत सरकार ने जनरल शाहनवाज खान के ऊपर एक डाक टिकट भी जारी किया था। विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल दुनिया की सर्वश्रेष्ठ लाल किले का निर्माण कार्य का प्रारंभ मुगल बादशाह शाहजहां के जरिए 1638 ईस्वी में शुरू करवाया गया था। लाल किला भारत की एक ऐतिहासिक इमारत है यह भारत की राजधानी नई दिल्ली के पास पुरानी दिल्ली में यमुना नदी के पश्चिमी तट में स्थित है। भारत के इस भव्य लाल किले का निर्माण कार्य 1638 से लेकर 1648 ईसवी तक करीब 10 साल तक चलता रहा। मुगल बादशाह शाहजहां के द्वारा बनाई गई सभी इमारत का अपना अलग-अलग ऐतिहासिक महत्व है जैसे ताज महल, जामा मस्जिद वगैराह । लाल किले को लाल पत्थर से बनाया गया है संगमरमर पर फूलों की नक्काशी और दो गुंबजों वाले किले को एक दीवार से घेरकर रखा गया है इसकी लंबाई 2.41 किलोमीटर है इसकी डिजाइन आर्किटेक्ट अहमद लाहौरी ने तैयार किया था जिसने ताजमहल का खाखा भी खींचा था। 1638 में जब मुगलिया सल्तनत की राजधानी आगरा से दिल्ली बनी तो लाल किला बनवाने का काम शुरू किया गया था। यह 200 साल तक मुगल बादशाहों के प्रमुख आवास के रूप में रहा है।

संकलन एवं प्रस्तुति -साजिद खान धनपुरी शहडोल म.प्र

दैनिक
मुंबई हलचल
08
मुंबई, गुरुवार
15 अगस्त, 2024

AUGUST 15th

समस्त देशवासियों को राष्ट्रीय महापर्व

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

15 अगस्त एक ऐसा दिन है जो हमें आजादी की याद दिलाता है और उन शहीदों की याद दिलाता है, जिन्होंने इस देश के लिए अपना घर, अपना परिवार एवं अपनी जिंदगी सब कुर्बान कर दिया।

दिलशाद एस. खान
संपादक - दै. मुंबई हलचल
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र अध्यक्ष व प्रभारी (एबीपीएसएस)
+91 96191 02478